राष्ट्रोपनिषत्-प्रस्तावना-शतकम्

संस्कृत-रूपान्तरण-कर्त्ता
आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कर
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्ता
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वर स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरीजी महाराज
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर

(गताङ्कादग्रे)

कन्यां स्व - रिपुं मत्वा, गर्भ एव हन्ति महामूढः क्रूरः।
जातामपि च पुनस्ताम्, उत्पीडयति पदे पदे नैक-रीत्या ॥22॥

वह महामूर्ख क्रूर मानव कन्या को अपना शत्रु मान कर गर्भ में ही मार देता है और पैदा हुई को भी फिर वह उसको पद पद पर अनेक प्रकार से उत्पीड़ित करता रहता है।

Those stupid people think that girls are their enemies and are killing them in the womb, and if any girl by pure chance is born, she is being mistreated in every step of her life.

स्त्रीणामपहृतिः पुनस्-,तासु बलात्कारोऽथ च तासां हत्या ।
ईदृशं घृणित - कर्म, कियत्कालं द्रष्टव्यं ? श्री गुरुदेव ! ॥23॥

स्त्रियों का अपहरण, फिर उन पर बलात्कार और उनकी हत्या, हे श्रीगुरुदेव ! ऐसा घृणित कर्म कब तक देखना है ?

Oh Gurudev, till when we shall witness these horrible deeds of the abduction of women, their rape and murder?

राजनीतौ सत्यमिह, नैवानुभूयते केनापि साम्प्रतम् ।
असत्यस्यैवापरं, नाम समजायत व्यवहारे सम्प्रति ॥24॥

राजनीति में सत्य यहाँ वर्तमान में किसी के द्वारा भी अनुभूत नहीं किया जा रहा है। इस समय तो व्यवहार में असत्य का ही दूसरा नाम राजनीति हो गया है।

Nowadays, nobody is following the truth in politics. Today, another name for the lie is politics.

अर्थोपार्जनमात्रं, जीवनस्यैक - लक्ष्यं मम्मन्यतेऽद्य ।
कार्याकार्य-विचारो, न कीदृशोऽपीह कदापि क्रियते हा ! ॥25॥

आज केवल धन उपार्जित करना ही जीवन का एक लक्ष्य माना जा रहा है। इस समय में कार्य और अकार्य का कैसा भी विचार कभी नहीं किया जाता, हा ! दुख है।

Acquiring wealth is the only aim of life. Yes, it is a pity, that today nobody even thinks about good or bad deeds.

व्यापारिणस्तेनैव, खाद्य - पेयादावपमिश्रणं विधाय ।
ग्राहकाणां स्वास्थ्येन, यथेच्छं क्रीडन्ति निःशङ्काः सम्प्रति ॥26॥

इसी कारण व्यापारी लोग खाने-पीने आदि की वस्तुओं में अपमिश्रण करके ग्राहकों के स्वास्थ्य के साथ निःशङ्क होकर इच्छाअनुसार इस समय क्रीड़ा कर रहे हैं।

Due to that, merchants are today selling, like it's a game, as they like and without any concern, the adulterated food and drinks to the customers.

औषधमपि कुमिश्रणाद्, भवति प्राण-घातकं रोगिभ्यो हन्त ! ।
नास्त्यङ्कुशोऽलमेष्विह , दुष्टेष्वपमिश्रण - कर्त्तृषु जनेषु हा ! ॥27॥

दुःख है, कुमिश्रण के कारण औषध भी रोगियों के लिए प्राण घातक बन जाती है। इन दुष्ट अपमिश्रण करने वाले लोगों पर यहाँ पर्याप्त अङ्कुश नहीं है, हा ! दुःख है।

It is sad that, due to adulteration, medicine becomes deadly. Yes, it's a pity, that there is no proper control for such an evil person.

गावो विश्वमातरः, पुरातनकालतः कथ्यन्ते सदैव ।
इतः सर्वमपि लभ्यं, द्रव्यं भवति जीवनोपयोग्यमूल्यम् ॥28॥

पुरातन काल से सदा ही गाय विश्व मातायें कहीं जाती है। इनसे मिलने वाले सभी अमूल्य पदार्थ जीवन के लिये उपयोगी होते हैं।

In olden times cows were always addressed as the mothers of the world. All the priceless things we get from them are useful in our lives.

(क्रमशः)